

---

# Shri Krishna Ashtakam

श्रीकृष्णष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Shri Krishna Ashtakam

File name : kRRiShNASHTakam12.itx

Category : vishhnu, krishna, aShTaka, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Author : Swami Umeshvaranand Tirth

Proofread by : Paresh Panditrao

Description/comments : Ganga Mahatmya And Stuti Ratnavali By Swami Umeshvaranand Tirth

Latest update : July 8, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 2, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Krishna Ashtakam

---

## श्रीकृष्णष्टकम्

---



श्रीकृष्णायन्द्र पुरुषोत्तम केशवाय  
राधावराय वरवारिजलोचनाय ।  
गोपाङ्गनाजन सुशोभित विग्रहाय  
कृष्णायव्योमशदृशायनमामिनित्यम् ॥ १ ॥

तस्मै परस्मै पुरुषाय साक्षिणे  
स्वभृत्य संसार विपद्विनाशिने ।  
अदीन लीलाकर दृग्भूतारिणे  
नमामिसर्वान्त गुहान्तरात्मने ॥ २ ॥

शिषिपिच्छ मौलीमुकुटे सुशोभिते  
उस्ते सुदिव्यमुरली सुभद्रासदाते ।  
वृन्दावने यलसिगुल्मलतादि मध्ये  
पद्भ्यान्नुपूरकवलयन् रमणायते नमः ॥ ३ ॥

गोवर्धनाद्रि निकटे वनकुञ्ज मध्ये  
गो गोपवाल परिवेष्टित नन्दबालम् ।  
अकेन उस्तकमलेन गृहीतयष्टि  
मन्ये करेण धृतवेषु रसादि पूर्णम् ॥ ४ ॥

तं गोपवंश सुभद्रं वसुदेव सुनूं  
वन्दे सदैव भवपाश विनाशदक्षम् ।  
आनन्दमात्रमयलं परिपूर्णकामं  
कामादि शत्रुदमनाय सदैव तत्परम् ।  
संसार सागर समुत्तरणवलयम्भनं  
कृष्णं नमामि सततं भवरोगभेषजम् ॥ ५ ॥

श्रीराधिकाया शुभदृत्सरोजे  
मूर्त्यङ्कितं तेदृद्येऽपिराधा ।

परस्पर प्रेमरसाश्रयाभ्यां

नमो नमः श्रीहरिराधिकाभ्याम् ॥ ६ ॥

गोपीजनः सुदुष्टिमन्दिर वासकारी

गोवर्द्धनाद्रिधरसर्वभयापहारिः ।

शङ्कस्यगर्वशिखरस्य विनाशकारीः

मोहान्धकार मनसिवसतां मुरारिः ॥ ७ ॥

हे कृष्ण हे यदुपते भुवनैक भन्धो

हे माधव मृदुपदे कुरुषौकसिन्धो ।

हे सख्येदात्म सुभद्रुपसुधैकसिन्धो

मां पाळि पाळि भगवन् प्रणामामिनित्यम् ॥ ८ ॥

कलाषोऽशपूर्याय सौन्दर्यस्य मङ्गलार्थि ।

अैश्वर्यादिसमग्राय कृष्णायन्द्राय ते नमः ॥ ९ ॥

एति श्री स्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थविरचितं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Paresh Panditrao

---

*Shri Krishna Ashtakam*

pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

